हिन्दू आश्रम-व्यवस्था

भारत एक धर्मप्राण देश रहा है। धर्म के दो स्वरूप होते हैं, प्रथम व्यक्तिगत एवं द्वितीय सामाजिक। हिन्दू सामाजिक व्यवस्था के अन्तरगत इन दोनों ही प्रकार के धर्मों की प्राप्ति एवं साधना आवश्यक मानी गई है। यहाँ व्यक्तिगत एवं सामाजिक धर्म से अभिप्राय समझ लेना आवश्यक है। व्यक्तिगत धर्म वह है जिसके साधन से व्यक्ति मोक्ष अथवा कैवल्य की साधना करता है। हमारे धर्म के अनुसार व्यक्ति के जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है। मोक्ष क्या है? मोक्ष आत्मा की पुनरागम के बन्धन से मुक्ति है। अद्वैतवेदान्ती लोग मोक्ष आत्मा का परमात्मा में लय हो जाना मानते हैं, परन्तु द्वैतवेदान्ती आत्मा की कर्मबन्धन से मुक्ति ही मोक्ष मानते हैं। परन्तु मोक्ष की प्राप्ति बिना सम्यक् ज्ञान के संभव नहीं है, अतः ब्रह्ममय होने के

धर्मप्राण	adj	religious
स्वरूप	m	form
व्यक्तिगत	adj	individual, personal
के अन्तर्गत	pp	included in
साधना	f	accomplishment
अभिप्राय	m	meaning
कैवल्य	m	liberation
चरम लक्ष्य	adj+m	final goal
पुनरागम	m	rebirth, reincarnation
अद्वैतवेदान्ती	m	follower of Non-dualistic Vedānta
लय हो जाना	i	to be absorbed
द्वैतवेदान्ती	m	follower of dualistic Vedānta
सम्यक् ज्ञान	adj+m	Perfect Knowlege
ब्रह्ममय	adj	full of Brahma

लिए व्यक्ति को ब्रह्मचारी होना पड़ता है। ब्रह्मचारी का शब्दार्थ है, 'ब्रह्मचरित इति ब्रह्मचारी' - अर्थात् जो ब्रह्म का चरण या भक्षण करता है। इसका लाक्षणिक अर्थ हुआ जो ब्रह्मज्ञान की उपासना करता है। अतः पुरुष को व्यक्तिगत धर्म की प्राप्ति के लिए ब्रह्मचारी एवं मुमुक्षु होना आवश्यक है।

व्यक्ति समाज का अविभाज्य अंग है। यदि सभी व्यक्तिगत धर्म की ही उपासना करने लगेंगे तो सृष्टि का विकास रुक जाएगा। तथा ऐसा सम्भव भी तो नहीं है कि व्यक्ति के अपने समाज के प्रति जो उत्तरदायित्व हैं, उनका निर्वाह न करे अतः इन सामाजिक उत्तरदायित्वों की पूर्ति के लिए समाज धर्म की स्थापना की गई। इस समाज धर्म के मुख्य दो अङ्ग माने गये हैं, प्रथम तो व्यक्ति के ऊपर अनेकों ऋण हैं - उनको वह समाज में रहकर उतारे, तथा द्वितीय अपनी स्वयं की इच्छाओं की पूर्ति करे। हिन्दू धर्म के अनुसार जो ऋण हैं, वे पितृ-ऋण, देव-ऋण, ऋषि-ऋण, अतिथि-ऋण एवं भूत-ऋण आदि हैं। ये ऋण तभी उतर सकते हैं, जब कि वह पंच महायज्ञ करे - पितृ

शब्दार्थ	m	meaning (of a word)
ब्रह्मचरित	adj	'Brahma-practiced'
इति	indecl.	unquote
चरण करना	m+t	to revere
भक्षण करना	m+t	to partake of
लाक्षणिक	adj	metaphorical
उपासना	f	devotion
मुमुक्षु	adj	desiring Mokṣa
अविभाज्य	adj	indivisable
सृष्टि	f	creation
उत्तरदायित्व	m	responsibility
निर्वाह	m	accomplishing
ऋण	m	debt
उतारना	t	to fulfill (a debt); to lift
स्थापना करना	f+t	to establish

यज्ञ, देव यज्ञ, ऋषि यज्ञ, अतिथि यज्ञ एवं भूत यज्ञ। इन सभी यज्ञों की पूर्ति के लिए धनोपर्जन करना अति आवश्यक है। अतः समाज धर्म का प्रथम अङ्ग हुआ - अर्थ। समाज धर्म का द्वितीय अङ्ग है, व्यक्ति अपनी स्वयं की इच्छाओं की पूर्ति करे। इन इच्छाओं में यौन सम्बन्धी इच्छा को प्रथम स्थान है। क्योंकि इस इच्छा की पूर्ति के बिना व्यक्ति अपने व्यक्तिगत धर्म से किसी भी समय च्युत हो सकता है। अतः समाज धर्म का द्वितीय अङ्ग हुआ - काम। इस प्रकार हिन्दू धर्म के अनुसार मनुष्य जीवन का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की प्राप्ति है।

जिस प्रकार हिन्दू धर्म ने मनुष्य के जीवन को चार लक्ष्यों की प्राप्ति का निर्धारण किया है, उसी प्रकार उसके जीवन को इन चार लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये चार वर्गों में विभाजित किया है, जिन्हें हम आश्रम की संज्ञा से विहित करते हैं। आश्रम शब्द का अर्थ है - श्रम करना। "इस प्रकार आश्रम व्यवस्था से अभिप्राय उस व्यवस्था से है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति की जीवन यात्रा में कुछ निश्चित सोपान बने होते हैं, जहाँ उसे एक निश्चित प्रकार का कार्य करना पड़ता है। हर एक प्रकार के कार्य करने की अवधि होती है

धनोपार्जन करना	adj+t	to acquire wealth
च्युत	adj	ruined, brought low
उद्देश्य	adj	aim, goal
निर्धारण करना	m+t	to set up
वर्ग	m	class, category
विभजित करना	adj+t	to divide
संज्ञा	f	designation, word; noun
विहित करना	adj+t	to institute (=call by name)
श्रम करना	m+t	to work
सोपान	m	steps
अवधि	f	time period

जिससे इसी जीवन यात्रा में प्रत्येक प्रकार के कार्य वह करता हुआ मनुष्य जीवन के अन्तिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति के योग्य बन जाते हैं। इसीलिये महाभारत में वेदव्यास ने कहा है कि जीवन के चार आश्रम चार विकास की सीढ़ियाँ हैं, जिससे जीवन यात्रा में मानव ऊपर चढ़ता हुआ ब्रह्म की प्राप्ति कर लेता है।"[1]

उपनिषद् काल में पहले आश्रम तीन थे या चार इस विषय में विद्वानों में मतभेद है क्योंकि मनुस्मृति में तीन ही आश्रमों का वर्णन आया है।[2] परन्तु आश्रम चार हैं इस विषय में जाबालोपनिषद में स्पष्ट लिखा है कि "ब्रह्मचर्य आश्रमं समाप्य गृही भवेत् गृही भूत्वा वनी भवेद्वनी भूत्वा प्रव्रजेत्।" अर्थात् ब्रह्मचर्य आश्रम को समाप्त कर गृहस्थी होकर वानप्रस्थी हो तथा वानप्रस्थी होकर सन्यासी हो। इस प्रकार हिन्दू धर्म-व्यवस्था के अनुसार मनुष्य जीवन को निम्न चार आश्रमों में विभाजित किया है, जिनका कि हम यहाँ संक्षिप्त अध्ययन करेंगे :--

---

अन्तिम लक्ष्य	adj+m	Final Goal
के योग्य	pp	proper for
सीढ़ी	f	stair, step
मतभेद	m	difference of opinion
मनुस्मृति	PNf	Manu Smṛti (a text)
वर्णन	m	description
जाबाल-उपनिषद्	PNm	Jābāla Upanishad (a text)
स्पष्ट	adj/adv	clear(ly)
संक्षिप्त	adj	abridged
अध्ययन	m	study

---

1. शिवस्वरूपसहाय, हिन्दू सामाजिक संस्थायें। किताब महल, पृष्ठ ७३.
2. एवहि त्रयो लोका त एव त्रय आश्रमाः॥ मनु, ॥, २३०

१ - ब्रह्मचर्य
२ - गृहस्थ
३ - वानप्रस्थ
४ - संन्यास

१ - <u>ब्रह्मचर्याश्रम</u> - ब्रह्मचर्य आश्रम हिन्दू आश्रम व्यवस्था के अनुसार सर्वप्रथम आश्रम है। इस आश्रम में व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करता है। प्रत्येक बालक अपने वर्ण के अनुसार शिक्षा ग्रहण करता है। जैसे ब्राह्मण का बालक वेद का अध्ययन इसके उपाङ्गों के साथ करता है। प्रमुख अध्ययन श्रुतियों का अध्ययन होता है, उसी प्रकार क्षत्रिय बालक धर्म की शिक्षा के साथ-साथ धनुर्वेद का ज्ञान विशेष रूप से करता है। उसी प्रकार वैश्य पुत्र का अध्ययन धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ अथर्ववेद का अध्ययन मुख्य है।

ब्रह्मचर्य आश्रम में प्रविष्ट होने के लिए आयु निश्चत हैं, प्रायः ब्राह्मण के बच्चे से ८ वर्ष की अवस्था में, क्षत्रिय पुत्र से ११ वर्ष की अवस्था में एवं वैश्य पुत्र से १२ वर्ष की आयु में इस आश्रम प्रवेश का विधान है।

इस आश्रम में व्यक्ति को बड़े संयम से रहना पड़ता है, तथा उसे गुरुओं की सेवा करनी पड़ती है। वायुपुराण में लिखा है कि "ब्रह्मचारी दण्ड तथा

शिक्षा	f	instruction
उपाङ्ग	m	appurtenances
श्रुति	m	(The Śruti texts) revealed literature
धनुर्वेद	m	a text on archery
धनुष्	m	a bow
अथर्ववेद	m	a text - Atharva Veda
प्रविष्ट होना	adj+i	to enter
आयु	m	(proper) age
संयम	m	temperance
सेवा करना	f+t	to serve
वायुपुराण	PNm	a text - Vāyu Purāṇa
दण्ड	m	staff, stick

मेखला (मूँज का जनेऊ) धारण करे, भूमि पर शयन करे, जटाधारी हो, गुरु की श्रद्धापुर्वक सेवा करे तथा विद्याध्ययन के लिये भिक्षावृत्ति करे ।"

इसी प्रकार मनुस्मृति में लिखा है कि "ब्रह्मचारी के लिये मधु, माँस, गन्ध, माला, अच्छे मधुराधि रस, स्त्री, प्राणियों की हिंसा, तैलादि का मर्दन, आँखों में अंजन, जूता पहनना, छत्र धारण करना, काम, क्रोध, लोभ, नाचना, गाना,

---

मेखला	m	sacred thread
मूँज	m	reed
जनेऊ	m	sacred thread
धारण करना	m+t	to wear
शयन करना	m+t	to lie down, to sleep
जटाधारी	m	one who wears matted locks
श्रद्धा-पूर्वक	m	faithful
विद्याध्ययन	m	learning
भिक्षावृत्ति	f	begging (for alms)
गंध	m	perfume
मधुराधि	adj	sweet
प्राणी	m	living thing
हिंसा	f	violence
तैल	m	oil, unguent
मर्दन	m	rubbing on
अंजन	m	eye-black, cosmetics
छत्र	m	umbrella

बजाना, जुआ, झगड़ा, परनिन्दा, असत्य और स्त्रियों से एकान्त में बात करना तथा दूसरों को चोट पहुँचाना वर्जित है ।"

इस प्रकार से ब्रह्मचर्य आश्रम में रहता हुआ व्यक्ति धर्म की साधना करता है, ज्ञान प्राप्त करता है, जिससे कि वह अपने जीवन के अन्य तीन लक्ष्यों को भी आगे प्राप्त कर सके ।

२ - गृहस्थाश्रम - ब्रह्मचर्याश्रम की समाप्ति के बाद जब व्यक्ति ज्ञानवान हो जाता है, तब उसे सामाजिक धर्म की उपासना का विधान है । इस आश्रम में रहकर मनुष्य अर्थ एवं काम की उपासना करता है । इस आश्रम में रहकर ही वह अनेक ऋणों से मुक्त होता है । अतः गृहस्थाश्रम में मनुष्य प्रवेश करते ही अपना विवाह एवं अर्थ उपार्जन का प्रयत्न अपने-अपने वर्ण के निश्चित व्यवसायों के अनुसार करता है । वायुपुराण के अनुसार गृहस्थाश्रम में "व्यक्ति अपने अनुकूल गुण, कर्म और स्वभाव वाली स्त्री के साथ यज्ञ करे, अतिथि

जुआ	m	gambling (dice)
झगड़ा	m	argumentation
परनिन्दा	f	slander
असत्य	m	untruth
एकान्त में	adv	alone
चोट पहुँचाना	f+t	to cause injury
वर्जित	adj	forbidden
जिससे कि	conj	so that
आगे	adv	later on, in the future
ज्ञानवान	adj	knowlegeable
उपासना	m	homage, service
उपार्जन	m	acquiring
व्यवसाय	m	profession, business
गुण	m	qualities

सेवा करे, ऋषियों एवं पितरों की पूजा करे तथा सन्तानोत्पत्ति करे, संक्षेप में गृहस्थ व्यक्ति का यही धर्म बताया गया है।"

इस प्रकार गृहस्थाश्रम में सर्वप्रथम तो प्रियदर्शनी प्रियवादिनी स्त्री होनी चाहिये, दूसरे इस विवाह का लक्ष्य सन्तानोत्पत्ति होना चाहिये। सन्तानोत्पत्ति से ही व्यक्ति पितृ ऋण से उतृण हो सकता है। बालक का पालन-पोषण भी उसी का कार्य है। सभी आश्रमवासी भी इस आश्रम पर निर्भर करते हैं, अतः धनोपार्जन करते हुए ऋषि ऋण तथा अतिथि ऋण आदि को यज्ञों द्वारा पूरा करते रहना चाहिये। यज्ञ का तात्पर्य अग्निहोत्र मात्र से नहीं है, अपितु समय-समय पर इनकी तन, मन, धन से सेवा करता है।

३ - वानप्रस्थाश्रम - जब व्यक्ति अपने सभी ऋणों से मुक्त हो जाता है, एवं काम की उपासना कर लेता है तब उसे अपने जीवन के चरम लक्ष्य की ओर उन्मुख होना चाहिये। क्योंक संसार की वासना से वह लिप्त हो चुका

सन्तानोत्पत्ति	f	the producing of offspring
संक्षेप में	adv	in summary
प्रियदर्शनी	adj	pleasing to behold
प्रियवादिनी	adj	pleasing to listen to
उतृण	adj	freed from debt
पालन-पोषण	m	upbringing
निर्भर करना	adj+t	to depend on
धनोपर्जन	m	the acquisition of wealth
तात्पर्य	m	purpose
मात्र से	adv	merely
तन	m	body
उन्मुख होना	adj+i	to turn towards
वासना	f	desire
लिप्त	adj	covered with, besmeared

होता है, अतः इस संसार को छोड़कर एकदम से वह मोक्ष के लिए अनुरक्त नहीं हो पाता है, इस स्थिति में वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश का विधान है, जिसमें रहकर वह अपनी मनोवृत्तियों को परमपिता परमेश्वर की ओर केन्द्रित कर सके। जब वह यह करने में सफल हो जाए उस समय उसे संन्यास आश्रम में प्रविष्ट होना चाहिये। मनुस्मृति में लिखा है "जब गृहस्थ यह देखे कि उस की शरीर की त्वचा शिथिल हो गई है अर्थात् झुर्रियाँ पड़ गई हैं, बाल पक गये हैं, पुत्र के भी पुत्र हो गया है तब विषयों से रहित होकर वन का आश्रम ले।"

वानप्रस्थ की अवस्था में वायुपुराण के अनुसार व्यक्ति को वल्कल या मृग चर्म धारण करना चाहिये। चावल, कन्द, मूल और फलों का भोजन करना चाहिये। दोनों सन्ध्या समय स्नान करना चाहिये तथा जंगल में रहते

एकदम से	adv	suddenly
अनुरक्त	adj	fond of
मनोवृत्ति	f	mental forces
केन्द्रित करना	adj+t	to concentrate
सफल	adj	successful
त्वचा	f	skin
शिथिल	adj	loose
झुर्री	f	wrinkle
बाल	m	hair
पकना	i	to turn grey (to ripen)
से रहित	pp	devoid of
वल्कल	m	cloth of bark
मृग चरम	m	deer skin
कन्द	m	tuber
मूल	m	root
सन्ध्या	f	evening

हुए नित्यप्रति अग्नि होत्र करना चाहिये। इसी प्रकार मनुस्मृति ने भी विधान किया है कि "सब प्रकार के ग्राम्य भोज्य पदार्थ तथा अन्य सब वस्तुओं का परित्याग कर, स्त्री को पुत्रों के समीप छोड़कर अथवा साथ ही लेकर वन को जाए।" इस के आगे लिखते हैं कि उसे वानप्रस्थी अवस्था में "नित्य स्वाध्याय में निरत रहना चाहिये, अत्यन्त संयमी होना चाहिये, सबको मित्रभाव से देखने वाला होना चाहिये, मन को वश में करने वाला होना चाहिये, नित्य दानशील हो तथा दान न ले एवं सब प्राणियों पर दया करे।" इस वानप्रस्थ जीवन में व्यक्ति अपनी समस्त इच्छाओं का दमन करता हुआ, परमात्मा की आराधना में नित्यप्रति अधिकतर मन को लगाता जाए।

४ - <u>संन्यासाश्रम</u> - जब व्यक्ति वानप्रस्थ आश्रम में रहता हुआ वीतराग

नित्यप्रति	adv	daily
ग्राम्य	m	sexual enjoyment
भोज्य	m	indulgence in food
पदार्थ	m	argumentation
परित्याग करना	m+t	to give up (completely)
के समीप	pp	near
स्वाध्याय	m	continuous Veda study (to oneself)
निरत	adj	engaged in
अत्यन्त	adv	extremely
संयमी	adj	temperate
मन को वश में करना		to control one's mind
दानशील	adj	charitable
दया	f	compassion
समस्त	adj	entire
दमन करना	m+t	to suppress
आराधना	f	service
वीतराग	m	one who is free from worldly attachments

हो जाए तथा उसका मन मोक्ष की प्राप्ति के लिए ईश्वर सान्निध्य में रमने लगे उस समय संन्यास आश्रम को ग्रहण करने का विधान है। मनु महाराज ने विधान किया है कि "आयु के तृतीय भाग को यथोक्त रीति से वन में व्यतीत कर आयु के चतुर्थ भाग में सब प्रकार की आसक्तियों को छोड़ कर परिव्राट हो जाए अर्थात् वानप्रस्थी से संन्यासी हो जाए।" व्यक्ति संन्यासी होने के पश्चात् जंगल में चला जाता है। वह केवल मात्र मोक्ष का साधन करता है। उसका स्वादों से कोई प्रयोजन नहीं होता है, इसीलिये भिक्षा द्वारा प्राप्त समग्र सामग्री को एक में मिला कर वह एक समय भोजन करता है। घर के व्यक्ति उसका पुतला जलाकर श्राद्ध कर्म भी कर देते हैं। इसीलिये संन्यासी अपना नाम परिवर्तन कर लेता है। वह एक जगह ठहरता भी नहीं है। उसे एक से अधिक रात्रि किसी स्थान पर व्यतीत नहीं करनी चाहिये। किसी प्रकार का भी समाज से उसका लगाव नहीं होना चाहिये; हाँ यदि ग्राम में आते समय उसे कोई अनुचित कार्य होता हुआ दिखाई दे तो निर्भीक

सान्निध्य	m	nearness
रमना	i	to wander
यथोक्त	adj	as mentioned (before)
व्यतीत करना	adj+t	to spend time, to live
आसक्ति	f	attachment
परिव्राट	n	ascetic
स्वाद	m	taste, desire
प्रयोजन	m	purpose
समग्र	adj	entire
सामग्री	f	worldly goods
पुतला	m	image, doll, likeness
परिवर्तन	m	change
लगाव	m	connection
अनुचित	adj	improper
निर्भीक	adj	fearless

होकर उसे कह देना चाहिये। इस प्रकार का कठोर जीवन व्यतीत करते हुए ईश्वर सान्निध्य का प्रयत्न करना चाहिये।

उपर्युक्त चार आश्रमों में हमने देखा कि हिन्दू धर्म के सिद्धान्त, पुरुषार्थ - धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष पर आधारित हैं। इन आश्रमों की व्यवस्था से व्यक्ति को व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों ही प्रकार की उन्नति का अवसर मिलता था। कितनी अच्छी थी यह परम्परा? पर आज हिन्दू समाज में इस व्यवस्था का वर्णन केवल मात्र पुस्तकों में ही रह गया है, जीवन में चरितार्थ नहीं। आज व्यक्ति मुमुक्षु नहीं रहा है। इस का कारण ऐतिहासिक है। आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व से भारत में विभिन्न संस्कृतियों के घात-प्रतिघात चलते रहे हैं। मोक्ष के बारे में व्यक्ति की विभिन्न धारणाएँ रही हैं। इसके अनन्तर मुक्ति मार्ग के अनेक लोगों ने ईश्वर प्राप्ति के अन्य सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। अस्तु, भारत में होने वाली राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक उथल-पुथल इस व्यवस्था के भंग होने का एक

सिद्धान्त	m	theory, doctrine
आधारित	adj	supported, based
उन्नति	f	advancement
परम्परा	f	series
चरितार्थ	adj	successful, prevalent
घात-प्रतिघात	m	forces and counter-forces
धारणा	f	belief
प्रतिपादन करना	m+t	to set forth
अस्तु(Sanskrit)	'so be it'	
राजनीतिक	adj	political
सांस्कृतिक	adj	cultural
उथल-पुथल	m	confusion
भंग होना	adj+i	to break up

विशेष कारण है। परन्तु हिन्दू धर्म एक व्यापक धर्म है, उसने जीवन के किसी अङ्ग को नहीं छोड़ा है, अतः आज धार्मिक संकुल की अवस्था में भी हम यहाँ के व्यक्तियों में इन आश्रमों के प्रति आस्था पाते हैं। आज हिन्दू समाज मोक्ष की कामना तो करता है पर प्रयत्न नहीं। यही कारण है कि वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में जीवन व्यतीत करने वाले बहुत ही कम व्यक्ति मिलते हैं। ब्रह्मचर्य आश्रम का स्वरूप बदल गया है, इस का कारण देश-काल में होने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनीतिक परिवर्तन है। गृहस्थ आश्रम का स्वरूप ज्यों का त्यों है, आज भी तथा आज से जब आश्रम का व्यवस्था का प्रारम्भ हुआ था, इसकी गरिमा को ऋषिओं ने समझा था। आज भी विशुद्ध हिन्दू परिवार में पंच यज्ञ के विधान का पालन होता है। आज के वैज्ञानिक युग में जब कि हम धर्म की गरिमा को भूल इस स्थिति पर आकर खड़े हो गये हैं कि क्या करें? वहाँ हम परलोक को तो भूल ही गये एवं इस लोक की साधना भी सफलता से नहीं कर पा रहे हैं। आज समाज आगे चला जा रहा है, पर उसे यह पता ही नहीं है कि उसका लक्ष्य क्या है? मार्ग क्या है? बस निरन्तर तर्क एवं बुद्धि का प्रश्रय ले मीमांसा से

व्यापक	adj	many-sided, diverse
संकुल	m	crowd
आस्था	m	faith, reverence
परिवर्तन	m	change
ज्यों का त्यों	adj	just the same
गरिमा	f	importance
विशुद्ध	adj	virtuous, pure
वैज्ञानिक	adj	scholarly
साधना	f	accomplishment
निरन्तर तर्क	adj+m	unending reason
प्रश्रय	m	relying on
मीमांसा	f	learned religious debate

कार्य नहीं चलेगा। आज के समाजशास्त्री को इस विषय में बहुत कुछ सोचना एवं अनुसंधान कर समाज को वैज्ञानिक नियोजन से एक दिशा देने का उत्तरदायित्व है।

समाजशास्त्री	m	social scientist, sociologist
अनुसंधान	m	search
नियोजन	m	directing
दिशा	f	direction
उत्तरदायित्व	m	responsibility